Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

संस्कृत प्रतिभा के सम्पादकीय का वैशिष्ट्य

अक्षय सुराणा
शोधार्थी, संस्कृत-विभाग,
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर,
राजस्थान,भारत।

Article Info
Volume 4 Issue 1
Page Number: 12-17
Publication Issue :
January-February-2021

Article History
Accepted : 01 Jan 2021
Published : 08 Jan 2021

सारांश – संस्कृत प्रतिभा एक सर्जनात्मक पत्रिका है जो कि समकालीन संस्कृत साहित्य की समृद्धि की संवाहिका है। इसके सम्पादकीय चिन्तन-प्रौढि के प्रतिपादक हैं। नूतन विधाओं, नूतन आभाणकों के विषय में सम्पादकीय महत्त्वपूर्ण आलोचन प्रस्तुत करते हैं। उत्तम कविता की परिभाषा गढ़ते हुए उन्होंने अनेक अवान्तर लक्षण भी प्रस्तुत किये हैं। युगबोध को रेखांकित करती समीक्षा-पद्धति संस्कृत की समकालीनता तथा समानता की परिचायक है। सम्पादकमहोदय की यह उक्ति भी इसका समर्थन करती है-**'वस्तुतस्तु अपूर्वताया अवतारकालोऽयं संस्कृत जगति।'** बालसाहित्य, यात्रावृत्तान्त तथा अनूदितसाहित्य के विषय में सम्पादकीय का चिन्तन नवीन शोधार्थियों का मार्गदर्शक है।

मुख्य शब्द- संस्कृत, प्रतिभा, सम्पादकीय, भाषा, पत्रकारिता, साहित्य।

प्रत्येक भाषा तथा साहित्य की परम्परा के सम्वर्धन में पत्रकारिता की महत्त्वपूर्ण भूमिका दृष्टिगोचर होती है। संस्कृत भाषा में पत्रकारिता की भास्वरता पृथक् रूप में भासित होती है। दैनिक समाचार-पत्र तथा साहित्यिक पत्रिकाओं ने संस्कृत भाषा के मृतभाषा रूप आरोप को दृढ़ता से निरस्त कर दिया। यदि हम समकालीन संस्कृत साहित्य के युगत्रय विभाजन की ओर दृष्टिपात करते हैं तो अप्पाशास्त्रिराशिवडेकर युग, भट्ट मथुरानाथशास्त्रियुग और वी.राघवन् युग ये तीनों विद्वान् संस्कृत साहित्य के प्रतिष्ठित पत्रकार तथा कवि के रूप में सुप्रथित रहे। अप्पाशास्त्रिराशिवडेकर की संस्कृत-चन्द्रिका, भट्टमथुरानाथशास्त्री का संस्कृत-रत्नाकर और वी.राघवन् के सम्पादकत्व में संस्कृत प्रतिभा का प्रकाशन तत्तद् युग की महती उपलब्धि थी। संस्कृत पत्रकारिता का उद्भव उन्नीसवीं शताब्दी का उत्तरार्ध माना जाता है। तब से लेकर अद्यावधिपर्यन्त संस्कृत पत्रिकायें युगबोध को विषय बनाकर अद्भुत सर्जना शक्ति से सभी को चमत्कृत कर रही हैं। इसी शृंखला में साहित्य अकादमी, नई दिल्ली से प्रकाशित होने वाली 'संस्कृत प्रतिभा' सर्जनात्मक पत्रिका के रूप में विशिष्ट स्थान रखती है। 'संस्कृत प्रतिभा' वर्ष 1960 से निरन्तर प्रकाशित हो रही है। डॉ. राघवन् ने अत्यन्त कठिन परिश्रम से प्रतिभा के अंकों को पाठकों के लिये आकर्षक बनाया। सन् 1981 में डॉ. राघवन् के निधन के पश्चात् इसका सम्पादन पं. विद्यानिवास मिश्र ने किया। सम्प्रति प्रोफेसर राधावल्लभ त्रिपाठी इस पत्रिका के यशस्वी सम्पादक हैं। संस्कृत-प्रतिभा में समकालीन संस्कृत ने नवनवोन्मेष स्वरूप

Copyright : © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

को प्रकाशित किया जा रहा है। संस्कृत प्रतिभा पूर्व में षाण्मासिक पत्रिका के रूप में प्रकाशित होती थी किन्तु वर्ष 2014 से अद्यावधि पर्यन्त यह त्रैमासिक पत्रिका के रूप में प्रकाशित हो रही है।

इसकी अनुक्रमणिका संस्कृत साहित्य की समृद्धि तथा अनवरतता की द्योतक है। पद्य-गद्य, अनुवाद तथा वैश्विक परिदृश्य के अन्तर्गत एक प्रत्यग्रता इस पत्रिका की अनुपम विशेषता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में संस्कृत-प्रतिभा के 2015-16 के आठ अंकों में प्रकाशित सम्पादकीय की संक्षिप्त समीक्षा की गई है।

संस्कृतप्रतिभा एक रचनात्मक पत्रिका है इसमें समकालीन संस्कृत साहित्य की विधा-बहुलता तथा विषय विविधता का एक मञ्जुल समन्वय पदे-पदे दृष्टिगोचर होता है। यह भी एक अपर गौरव है कि संस्कृतप्रतिभा को जिन सम्पादकों ने अपने संरक्षण के गौरव से गौरवान्वित किया, वे चिन्तन-परिपाक-प्रौढि से समकालीन संस्कृत साहित्य के शिरोमणि आचार्य तथा कवि प्रवर के रूप में सुप्रथित हैं। डॉ. वेङ्कट राघवन् तथा आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी ने सम्पादक के रूप में संस्कृत प्रतिभा को तत्तत् युग की अग्रभूता पत्रिका के रूप में स्थापित किया है।

यदि हम सम्पादकीय पर दृष्टिपात करते हैं तो इन सम्पादकीयों में हमें नाना प्रकार की वचोभङ्गिमायें एवं अर्थविच्छित्तियाँ प्राप्त होती हैं। हमारे देश की समकालीन संस्कृत सर्जना का उदात्त स्वरूप हस्तामलकवत् स्फुट रूप से ज्ञात होता है। अन्ताराष्ट्रिय पटल पर संस्कृत सर्जना तथा आलोचना की प्रगति से भी सम्पादकीय अनवरत अवगत कराते हैं।

नूतन विधाओं का प्रगति विवरण एवं आलोचन - सम्पादकीयों में आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी ने अनेकधा नूतन विधाओं के सन्दर्भ में अपनी चिन्ता तथा चिन्तन से अनेक उपयोगी एवं अभिप्रेरक टिप्पणियाँ की हैं।

सम्पादक यह नहीं मानते हैं कि संस्कृत साहित्य समस्त विधाओं से परिपूर्ण है। क्योंकि उन्हें विशेष रूप से बालसाहित्य एवं अनूदितसाहित्य का अभाव पीड़ित करता है। परम्परा पर गौरवान्वित होना चाहिए परन्तु अनवरत परम्परा में नूतन सन्धान हेतु भी सन्नद्ध रहना समकालीन साहित्यकारों का उत्तरदायित्व है।

इस अभाव का सञ्ज्ञान अनेक उदीयमान कवि ले रहे हैं। इसमें डॉ. भागीरथि नन्द के द्वारा प्रतिभाराय की कथाओं का उड़िया से संस्कृत में अनुवाद तथा विश्वास के द्वारा भैरप्पा के उपन्यासों का संस्कृतानुवाद आशा की किरण के रूप में प्रतीत होते हैं।[i]

जब सम्पादक अनूदित साहित्य की विशेषताओं को रेखाङ्कित करते हैं तो वे स्वयं उसका निदर्शन भी प्रस्तुत करते हैं। वेणीमाधवशास्त्री की कविता 'लताया मनोरथः' के प्रस› में सुप्रसिद्ध हिन्दी कवि माखनलालचतुर्वेदी की 'पुष्प की अभिलाषा' कविता का आचार्य त्रिपाठी पाठकों के कौतुकार्थ संस्कृतानुवाद प्रस्तुत करते हैं -

सुरबालायाः कण्ठे भूषणमालिकासु गुम्फितो वै स्याम्।
नैतत् कथमपि काव्यं जातु मदीयं वरीवर्ति।
.....
चित्त्वा मां वलमालिन्।
क्षिप पथि तस्मिन् प्रयान्ति ते यस्मिन्
मातृभुवो रक्षायै प्राणान् दातुं नैके वीराः।।[ii]

सम्पादक महोदय की यह टिप्पणी विशेषरूपेण अवधेय है कि लता के मनोरथ व्याज से कवि ने ज्वलन्त आधुनिक समस्याओं का उल्लेख किया है तथापि वेणीमाधव की लता माखनलाल के पुष्प से सम्वाद करती है।[iii] प्रज्ञासम्पन्न कवियों की अभिव्यक्तियों में इत्याकारक सम्वाद प्रायः सुलभ हैं। आचार्य आनन्दवर्धन कहते हैं –

'सम्वादास्तु भवन्त्येव बाहुल्येन सुमेधसाम्।'

अनुवाद के प्रस› में प्रायः अश्रुतपूर्व कविता का आचार्य संकेत करते हैं। वसन्त के अवसर पर प्रतिभा का उन्मेष (57) प्रकाशित हो रहा है। इस वसन्त ऋतु में ही प्रायः सौ वर्ष पूर्व क्रूर कर्नल डायर ने जलियाँवाला बाग में नृशंसा नरसंहार करवाया था। सुभद्राकुमारी चौहान ने 'जलियांवाला बाग में वसन्त' इस शीर्षक से एक कविता रची। उस कविता का अनुवाद भी आचार्य त्रिपाठी ने सम्पादकीय में प्रस्तुत किया –

कोकिलः कूजति नेह, काकाः कर्कशं रटन्ति
कृष्णाः कीटा एते भ्रमराणां भ्रमं जनयन्ति।।
.....ऋतुराज प्रिय शनैः शनैरिह त्वमायाहि।
शोकस्थानमिदं हि मा भूत-कोलाहलवाहि।
एतत् सर्वं कार्यमलमलमिह कोलाहलैः।
शोकस्थानं खल्वेतच्चलनीयमितः शनैः शनैः।।[iv]

नूतन विधायें – समकालीन संस्कृत साहित्य में यात्रावृत्तान्त एक महत्त्वपूर्ण विधा के रूप में उभर रहा है। संस्कृत कवियों ने गद्य तथा पद्य दोनों में ही यात्रावृत्तान्त की रचना की है। यात्रावृत्तान्त मात्र यात्रा का विवरण ही नहीं होता अपितु यात्रावृत्तान्त में विषयनिष्ठता एवं विषयिनिष्ठता के समन्वय से केवल तत्तत् स्थलों के ज्ञान से ही पाठकों का ज्ञानवर्धन नहीं होता अपितु पाठक भी उनके साथ सञ्चरणामृत को प्राप्त करते हैं। वस्तुतः इससे यात्रारस रूप एक नवीन रस ही अभिव्यक्त हो जाता है।

संस्कृत साहित्य में बालसाहित्य सर्जना अत्यल्प मात्रा में हुई है। वर्तमान संस्कृत सर्जना वस्तुतः अपूर्वता का अवतारकाल ही है। 'सप्तवर्णचित्रपत›' यह डॉ. सम्पदानन्द मिश्र के द्वारा रची गई बालसाहित्य विषयक महत्त्वपूर्ण रचना है। बालसाहित्य ऐसा होना चाहिए जिससे सुकुमारमति बालकों की कल्पना उन्मुक्त गगन में स्वच्छन्द विचरण कर सकें। प्रौढों के नीत्युपदेशरूपी पिञ्जरे में बलपूर्वक नियन्त्रित न कर दी जाये। डॉ. सम्पदानन्द मिश्र ने बालसाहित्य पर प्रत्यग्र प्रकाशन द्वारा नूतन द्वार को उद्घाटित किया है।[v]

सम्पादक आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी ने 'अभावा भावमापन्नाः' शीर्षक से बालसाहित्य के विषय में विशद टिप्पणी की है। प्राचीनकाल में सुकुमारमति बालकों के लिए महाकवियों ने उस प्रकार के रमणीय काव्य नहीं रचे जिस प्रकार के काव्य प्रौढमति के लिए रचे गये। गत कतिपय वर्षों में बालसाहित्य की रचना में सम्वर्धन दृष्टिगोचर हुआ है। इनमें औदार्यगदाधरम् (मधुसूदनः अडिगा, 2010) बालकथाः (पूजा उपाध्याय, 2013) कस्य निमित्तम् (राजकुमारी त्रिखा, नाट्यानि, 2010) कथा विचित्रा (राधिकारंजनदास, 2011) मृगपुराणम् (रमेश कथाः, 2014) आदि अनेक ग्रन्थ रचे जा चुके हैं।

सम्पादकवर्य बाल-साहित्य की रचना की चुनौतियों के प्रति भी सावधान करते हैं। बालसाहित्य की रचना के लिए वस्तुतः विशेष प्रतिभा की अपेक्षा होती है। कतिपय नवोदित साहित्यकार युवकों की उद्यमसमस्या, बेरोजगारों की सेवा के लिए साक्षात्कार, दहेज समस्या, आदि विषयों पर लिखे जा रहे रूपकों अथवा कथाओं को बाल-साहित्य के रूप में प्रस्तुत करते हैं। कतिपय अन्य नीतिशिक्षाप्रद अथवा सुभाषितप्रद कथाओं को ही बाल-साहित्य मानते हुए रचना कर रहे हैं। परन्तु बालसाहित्य के लिए बालमनोविज्ञान से सम्बद्ध विशिष्ट चातुरी की अपेक्षा रहती है। संस्कृत में जो बालसाहित्य-रचना के इच्छुक हैं, उन्हें सम्पदानन्द मिश्र के द्वारा रची गई सप्तवर्णश्चित्रपतङ्गः, केशवचन्द्रदाश का बालोपन्यास 'महान्', एच. विश्वास का 'मार्जारस्य मुखं दृष्टम्' (रूपकसङ्कलन) डॉ. हर्षदेव माधव का 'पिपीलिका विपर्णीं गच्छति' कविता सङ्कलन, ऋषिराजजानी का 'चमत्कारिकः चलदूरभाषः' (कथासङ्कलन) को सावधानीपूर्वक पढ़ना चाहिए। बालसाहित्य के नाम से लिखा जाने वाला साहित्य आजकल के बालकों के लिए हास्यास्पद न हो जाये। यह विशेषरूपेण ध्यातव्य है।

अनुवाद के प्रसंग में – बाङ्ग्लादेश के नजरुल इस्लाम, जीवनानन्ददाश तथा शामसुरराहमान, ये तीनों प्रसिद्ध कवि हैं। इनके बाङ्ग्ला से संस्कृत में अनूदित काव्य भी प्रतिभा में प्रकाशित किये गये।[vi] महाश्वेता देवी की कथा, ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविताओं का संस्कृत में अनुवाद, उदयप्रकाश (सुप्रसिद्ध हिन्दी रचनाकार) के साहित्य का अनुवाद आदि अनेक अनुवादपरक उपक्रमों का सम्पादक महोदय ने औचित्य तथा प्रयोजन स्पष्ट करते हुए उनके समायोजन की युक्तियुक्तता को प्रमाणित किया है –

तस्यां वस्तुद्वयं सर्वथा नवीनं मन्ये। प्रथमं तु अनुवादखण्डे कवेः ओमप्रकाशवाल्मीकेः हिन्दीकवितानामनुवादः। ओमप्रकाशवाल्मीकेः काव्यानि संस्कृतपाठकाः पठन्तु, शृण्वन्तु च तानपि स्वरान् ये शताब्दीभ्यः शिष्टसाहित्याद् बहिष्कृता अवस्कन्ना अवरुद्धाश्चासन्।[vii]

ओमप्रकाश वाल्मीकि के काव्य में मुख्यधारा से बहिष्कृत पात्रों की मार्मिक पीड़ा मुखर हुई है। उससे संस्कृत के पाठक अवगत हों तथा वह पीड़ा एक नूतन परम्परा की उत्थापक हो सकती है।

नूतन आभाणकों तथा शब्दों को गढ़ना – संस्कृत भाषा सर्वसमावेशी भाषा के रूप में अपनी छवि को निरन्तर परिमार्जित करती रही है। रचनाकारों की समृद्ध परम्परा ने अनेक नूतन आभाणकों का संस्कृत में अवतरण कराया है। अन्य भाषाओं के आभाणकों का संस्कृत में प्रयोग एक पृथक् भास्वरता का सञ्चार करता है। 'नेत्रेषु रजः प्रक्षिप्य' 'आँखों में धूल झोंककर' इस हिन्दी मुहावरे का ही अनुवाद है। आलंकारिक भोजराज ने छाया अलंकार का निरूपण करते हुए उसके छः भेदों में 'लोकोक्तिच्छाया' भेद का भी कथन किया है। साम्प्रतिक संस्कृत कवियों ने लोकोक्तिच्छाया का प्रभूत प्रयोग किया है।

विश्वास ने आङ्ग्लभाषा के 'डिस्टरबैंस' के लिए 'उपद्रव' शब्द का प्रयोग किया 'नर्स' के लिए 'अनुवैद्या' शब्द को गढ़ा गया। प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने खटमल के लिए 'खट्वाकीटः'[अपपप] पद का निर्माण किया। यद्यपि 'मत्कुण' शब्द पूर्व में ही विद्यमान था।

सम्पादकीय का भाषा-सौष्ठव – 'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति' यह साहित्यिक आभाणक आलोचक-जगत् में सुप्रथित है। पद्यापेक्षा गद्यलेखन अधिक अवधान की अपेक्षा रखता है। गद्यलेखन करते हुए छन्दोविधान की मात्रा तथा गणगणना की सीमा न होने पर कवि को स्वनिर्मित सीमा-बन्धन का पालन करना होता है। शब्द चयन अथवा सौष्ठव और औदार्य गद्य की गरिमा का सम्वर्धन करते हैं।

इन सब के आलोक में यदि हम संस्कृत प्रतिभा के सम्पादकीय पर दृष्टिपात करें तो सम्पादक प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी का भाषिक सौन्दर्य चित्ताकर्षक प्रतीत होता है। प्रत्येक कवि का परिचय देते हुए तत्तत् कवि के वैशिष्ट्य का प्रतिपादन बहुत कुशलता से किया गया है –

(i) कवितारमायाः कान्तो रमाकान्तो

(ii) कवितावनिताहर्षो हर्षदेवो माधवो प्रतिकाव्यं प्रयोगस्य नवीनां दिगुन्मीलयति।

(iii) युवकविः भारतीसुप्रभातेन सुविहितसंस्कृतकाव्यसुप्रभातः प्रकटीकृतप्रौढिः.....।[ix]

(iv) दिष्ट्या संस्कृतसमाजे संस्कृतभारतीसेवारतः इदानीं सन्ति उत्साहसम्पन्नाः अदीर्घसूत्रिणः दूरदृष्टयो युवानः। तैः कार्मण्येन क्वचित् रूढीनां भारेण जर्जरीभूता, क्वचिद्जरा चामरापि विभाविता, वयसा विलोकिताधिदशसहस्राब्दा स्थविरापि संस्कृतभारती यौवनोज्ज्वलकाया विभाति।

काव्यशास्त्रीय समीक्षा की अपूर्वता – संस्कृत प्रतिभा के सम्पादकीयों में आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी ने कविता एवं गद्य की नूतन विधाओं की काव्यशास्त्र के आलोक में अद्भुत समीक्षा की है। जो कि वस्तुतः अभिप्रेरणीय है।

यात्रावृत्तान्त के वैशिष्ट्य को रेखांकित करते हुए वे कहते हैं – 'वस्तुत एतेन (यात्रावृत्तान्तेन) यात्रारसो नाम नवीन एव रसोऽभिव्यज्यते। यात्राभीरुसमाजेन, तदास्वादनं न कर्तुं शक्यते।'[x]

यद्यपि पूर्ववर्ती काव्यशास्त्रियों ने यात्रारस को रस-प्रकारों में परिगणित नहीं किया तथापि सम्पादक महोदय ने नूतन उत्प्रेक्षा की है कि यात्रावृत्तान्त नामक विधा ने एक नवीन रस (यात्रारस) की सर्जना कर दी है।

सम्पादक महोदय ने अपूर्वता अथवा परम्परा-सम्वर्धन को संस्कृत साहित्य में घटित भी किया और सिद्धान्ततः उसकी व्याख्या भी की है।

वस्तुतस्तु अपूर्वताया अवतारकालोऽयं संस्कृतजगति।[xi]

प्रतिभा के उन्मेष 55 में सम्पादक महोदय उत्तम कविता को व्याख्यायित करते हुए कहते हैं –

उत्तमा कविता सैव या प्रश्नानां द्वाराणि अपावृणोति, अर्थानां नाना सम्भावना उन्मीलयति। यां पठित्वा अयमेव सुकर एक एव च सुनिश्चितोऽर्थ इति स्थूलबुद्धयोपि निर्णयन्ते सा कवितैव कीदृशी?[xii] उत्तम कविता वह होती है जो प्रश्नों के द्वारों की उन्मीलित करती है। अर्थों की नाना सम्भावनाओं को अभिव्यक्त करती है।

इसी प्रकार अन्यत्र सम्पादक कहते हैं कि हमारे काव्यों में कवित्व होना चाहिए और कथाओं में कथातत्त्व होना चाहिए न कि कोरे वाग्विलास ही हों।

ऐसे अनेक निदर्शन हमें सम्पादकीयों में प्राप्त होते हैं जहाँ आचार्य त्रिपाठी कवि मन के अन्तरतम में झाँकते हैं और काव्य के सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक लक्षण तथा प्रयोजन हमारे समक्ष प्रस्तुत करते हैं। इन लक्षणों को हम काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों में प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी ने सम्पादकीय में प्रो. उपेन्द्रावचौधुरी के 'धूलिशतकम्' काव्य की विवेचना करते हुए आलोचना के उत्कृष्ट स्तर को भी प्रतिमान के रूप में स्थापित किया है। 'धूलिशतकम्' वस्तुतः बीभत्सरसप्रधान काव्य है। स्वल्प कवि अथवा साहित्यकार ही बीभत्सरस के प्रयोग में विचक्षण होते हैं। उपेन्द्राव में ऐसा साहस दृष्टिगोचर होता है।

भरतमुनि ने बीभत्स रस को मूलरसों में परिगणित किया है। उपेन्द्राव ने न केवल धूलि की रमणीयता का रेखांकित किया है अपितु बीभत्स रस के उद्रेक में अद्भुतरस का मिश्रण कर सौन्दर्यलोक में उसका पर्यवसान किया है।[xiii] सम्पादक महोदय ने प्रकारान्तर से यह भी निरूपित किया है कि समकालीन काव्य की काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तों के आलोक में ही युक्तियुक्त व्याख्या सम्भाव्य है। दशरूपक, काव्यप्रकाश, भरत, अभिनवगुप्त आदि को उद्धृत कर सम्पादक महोदय ने अद्भुत व्याख्या की है जो कि समकालीन टीका पद्धति का उत्तम निदर्शन है।

संस्कृत प्रतिभा के सम्पादकीय लेखों में पदे-पदे वैचारिक उत्कर्ष दृष्टिगोचर होता है। समकालीन संस्कृत सर्जना तथा पौराणिक उदात्तता का मञ्जुल समन्वय, सम्पादकीय की अनिर्वचनीय विशेषता है। नूतन विधाओं पर सार्थक टिप्पणियों से पाठकों का ज्ञानसम्वर्धन करने वाले सम्पादकीय युगबोध के सम्वाहक हैं। भाषा-गौरव भी इनकी प्रातिस्विक विशेषता है।

सन्दर्भ -

i संस्कृत प्रतिभा, सम्पादकीय, उन्मेष, 57

ii संस्कृत प्रतिभा, सम्पादकीय, उन्मेष, 56

iii .....तथापि सम्वदति तदीया लता माखनलालकवेः पुष्पेण। एवंविधाः संवादाः मतिमतां कवीनामभिव्यक्तिषु भवन्त्येव। - संस्कृत प्रतिभा, पृ. 6

iv संस्कृत प्रतिभा, उन्मेष, 57, पृ. 6

v संस्कृत प्रतिभा, सम्पादकीयम्, उन्मेष 58

vi संस्कृत प्रतिभा, उन्मेष 59

vii तदेव, उन्मेष 58

viii संस्कृतप्रतिभा, उन्मेष 56, सम्पादकीयम्, पृ. 7

ix संस्कृत प्रतिभा, उन्मेष 54, सम्पादकीयम्, पृ. 7-8

x संस्कृत प्रतिभा, उन्मेष 58, पृ. 7

xi संस्कृत प्रतिभा, उन्मेष 58

xii संस्कृत प्रतिभा, उन्मेष 55, पृ. 7

xiii नास्ति किमपि वस्तु यत् काव्यविषयतां नावगाहेतेति अनेन काव्येन प्रत्ययो जायते। लोके निंदितानां जुगुप्सितानां वस्तूनां क्वचित् रमणीयमपि स्वरूपं कविराविष्कुरुते।..... संस्कृत प्रतिभा, उन्मेष 55, पृ. 12